पाकुड़ की गुलबहार बेगम
फाकाकशी से उबर कर समृद्धि की ओर

हाइलाइटर : असम की गुलबहार शादी के बाद झारखंड आ गयीं। यहां घर के नाम पर एक झोंपड़ी और कमाई के नाम पर पति के हाथ में कुछ रेजगारी उन्होंने देखा। यह सब कब तक चलता। उनके हाथ में सिलाई–कढ़ाई का हुनर था, जिसे पंख दे दिया आजीविका मिशन के सखी मंडल ने। आज उनका अपना स्टॉल है, जहां वे असमिया चादर और शॉल बेचकर अच्छे से अपना परिवार चला रही हैं। वे झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी को बार–बार दुआएं देती हैं, जिसने उनकी जिंदगी संवार दी।

झारखंड राज्य का सबसे पिछड़ा जिला पाकुड़्। विषम परिस्थितियां और बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भी कड़ी मेहनत और जद्दोजहद यहां की जीवन शैली में शामिल है। यहां के हिरनपुर प्रखंड में स्थित है कमल घाटी बस्ती। कमलघाटी के निवासियों के सामने आजीविका की गंभीर समस्या थी। झारखंड आजीविका मिशन के द्वारा इसे चिन्हित कर यहाँ सखी मंडल का गठन किया गया, जिससे जुड़कर यहां के कई परिवारों की जिन्दगी में बदलाव आया है। ऐसा ही एक परिवार है गुलबहार बेगम का।

गुलबहार मूलतः असम से हैं। झारखंड अपने पति की वजह से आयीं। लगभग 30 साल पहले इनके पति कपड़ा के छोटे व्यवसायी थे। इस सिलसिले में उन्हें असम आना–जाना पड़ता था। वहीं उनकी मुलाकात गुलबहार से हुई। नजदीकियां बढ़ीं और दोनों ने शादी कर ली। शादी के बाद गुलबहार जब अपनी ससुराल आयीं, तो इनके पांव तले जमीन खिसक गई। एक नयी शादीशुदा महिला के सारे सपने तार–तार हो गए। ससुराल की स्थिति बहुत दयनीय थी। घर के नाम पर एक झोपड़ी और कमाई के नाम पर पति की मुट्ठी भर रेजगारी। दो वक्त का भोजन एक बड़ा सपना था। जैसे–तैसे इनका जीवन बसर होने लगा। बच्चे हुए, समस्याएं और बड़ी होती गयीं। किस्मत ने गुलबहार को इतने पर ही नहीं बख्शा। इनके दो बच्चे दिव्यांग हैं और एक की हालत बहुत ही खराब है।

गुलबहार के सामने समस्याओं का अंबार था और समाधान के नाम पर एक हुनर गुलबहार असम की बोडो जनजाति से हैं। इनकी बिरादरी में लड़कियों के द्वारा असमिया चादर और शॉल बनाने की कला सीखना आवश्यक होता है। जिस लड़की को यह हुनर नहीं आता, उसकी शादी नहीं होती। उनके पास भी यह काबिलियत थी। उन्होंने धीरे–धीरे कुछ पैसों का जुगाड़ किया और असम से इनके माता–पिता ने भी कुछ मदद की। इन्होंने वहां से कुछ शॉल और चादर लाना शुरू किया, जिन्हें इनके पति बेचते थे। इससे कुछ पैसे आने लगे, जिससे परिवार का भरण–पोषण होने लगा। बच्चों की पढ़ाई गांव के लोगों की आपसी मदद से हो रही थी।

इसी दौरान गुलबहार ने धीरे–धीरे घर से बाहर निकलना शुरू किया और उनकी पहचान कई लोगों से हुई। गुलबहार जनवरी 2017 में ममता सखी मंडल से जुड़ीं और बैठक में नियमित भाग लेने लगीं। वहां एक दूसरे से बात करने, एक दूसरे को समझने और समस्या से बाहर निकलने का रास्ता उन्हें मिला। इनके गांव में अक्सर एमईसी भैया आना–जाना करते थे। उन्होंने गुलबहार के हुनर को पहचाना और उनसे बातचीत कर इससे रोजगार के अवसर उपलब्ध होने की बात कही। गुलबहार को मानो डूबते को तिनके का सहारा मिल गया। उन्होंने एमईसी की सलाह पर अपने हुनर को व्यवसाय का रूप देने का इरादा कर लिया। इन्होंने 50,000 के लोन के लिए आवेदन दिया। 3 सितंबर 2017 को इन्हें लोन मिला। इसके साथ–साथ हिनौर प्रखंड के कोरियोडीह में 2 दिनों का प्रशिक्षण भी मिला, जिसमें व्यापार की बारीकियों के बारे में इन्हें बताया गया।

पैसा मिलने के बाद गुलबहार असम गयीं और वहां से और शॉल और चादर लेकर आयीं। असम से सामान लाकर वे अपने आसपास के बाजारों और हाट–मेले में बेचने लगीं। इसी दौरान इन्हें एक मौका मिला सरस मेले में भागीदारी निभाने का। इन्होंने सरस मेले में अपने उत्पादों का एक स्टॉल लगाया। किस्मत ने यहां उनका साथ दिया। इनकी प्रतिदिन की बिक्री 10,000 से लेकर 25,000 तक होने लगी। इनकी ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा। गुमनामी के अँधेरे से बाहर आकर इन्हें जो सम्मान और पहचान मिला, उसने इन्हें काफी संबल दिया।

एक शॉल तैयार करने में इन्हें 300 रुपये की लागत आती थी, जबकि बिक्री 600 रुपये में होती थी। व्यवहार कुशल गुलबहार से लोग काफी प्रभावित होते थे, क्योंकि ये हिंदी भी बहुत अच्छी बोल लेती हैं। इनके आसपास के स्टॉल की दीदियां कहती थीं कि आपका सामान और व्यवहार दोनों बहुत अच्छा है, इसलिए आपका सामान जल्दी बिक जाता है। पाकुड़ में लगे मेले में भी इन्होंने एक दिन में लगभग 15,000 की बिक्री की। अब इनके हौसले को उड़ान मिल गयी थी। धीरे–धीरे अन्य शहरों में जाकर विभिन्न मेले और अवसरों पर गुलबहार स्टॉल लगाने लगीं और उनकी बिक्री बढ़ती गयी। आज गांव के लोग उनके हुनर और मेहनत को सलाम करते हैं। गुलबहार बेगम ने अपने गांव में ही शॉल निर्माण की मशीन लगा रखी है। ये अक्सर असम जाती हैं और वहां से ऊन और कच्चे माल लेकर आती हैं। उसके बाद यहां बैठकर वे शॉल

तैयार करती हैं। वे एक दिन में दो से तीन शॉल बना लेती हैं। गुलबहार का बेटा मुंबई काम करने के लिए चला गया था। जब उनका व्यवसाय धीरे–धीरे रास्ते पर आने लगा तो उनका बेटा भी नौकरी छोड़ अपने घर लौट आया है। गुलबहार आज अपने दम पर न सिर्फ अपना, बल्कि अपने आगे की पीढ़ियों के लिए भी एक सशक्त रोजगार का इंतजाम कर चुकी हैं। आज इनके पास उत्पाद तैयार करने वाले उत्पादों को बेचने वाले कई लोग जुड़े हैं।

गुलबहार अपनी सफलता का श्रेय झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी और एमईसी भैया को देती हैं। वे कहती हैं कि एक ऐसा भी वक्त था, जब मुझे एक वक्त रोटी देने वाला भी कोई नहीं था। ऐसी परिस्थिति में झारखंड स्टेट लाइवलीहुड प्रमोशन सोसाइटी ने मुझे 50,000 का लोन दिया। सरकार ने मुझ पर भरोसा किया और विपत्ति में मेरा साथ दिया। मैं जिंदगी भर जेएसएलपीएस को नहीं छोड़ूंगी और इससे जुड़ कर अपना भविष्य रोशन करूंगी। गुलबहार कहती हैं कि मैं न सिर्फ अपना, बल्कि अपने गांव के अन्य लोगों को भी अपने साथ जोड़कर इस व्यवसाय को आगे बढ़ाना चाहती हूं।